जालियाँवाला बाग सभी को याद है किन्तु.....

13 अप्रैल 2019 को सारे देश ने जालियाँवाला बाग के शहीदों को याद किया और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। किन्तु हम लोग जालियाँवाला बाग कांड के वास्तविक नायक शहीद शिरोमणि श्री ऊधम सिंह जी को याद करना भूल गए। भूल गए तो एक बहुत छोटा शब्द है जिसके लिए माफी भी माँगी जा सकती है।

असली दुर्भाग्य यह है कि हमे अपने देशवासियों का बर्बर अंग्रेजों द्वारा चीटियों की तरह मारा जाना तो इतिहास में पढ़ाया जाता है , पर जिसने इस कांड के सूत्रधार को उसी के देश इंग्लैंड में गोली से उड़ा कर भारतियों का सिर ऊंचा किया था उस नायक को स्वतंत्र भारत के इतिहास में कोई जगह नहीं मिली।

ओ' डायर 1919 में पंजाब प्रांत का डिप्टी गवर्नर जनरल था। पंजाब में उस समय स्वतन्त्रता आंदोलन अपने उत्कर्ष पर था। ओ' डायर ने अमृतसर में मार्शल ला लगा दिया था। 13 अप्रैल 1919 को बैसाखी मनाने के लिए जालियाँवाले बाग में हजारों लोग एकत्र हुए। यह उत्सव पूरी तौर पर गैर राजनीतिक था। इसमे अधिकांश लोग अमृतसर के बाहर के भी सम्मिलित थे जिन्हें अमृतसर में कर्फ़्यू होने का भान भी नहीं था।

कर्फ़्यू होने के बावजूद इन उत्सव-प्रेमियों को रास्ते में कहीं भी नहीं रोका गया और एक साजिश के तहत उन्हें जालियाँवाला बाग में एकत्र होने दिया गया। जब सारी भीड़ मैदान में एकत्र हो गई तब औ डायर के आदेश पर 'रेजीनाल्ड डायर' जो अमृतसर के प्राशासन का जिम्मेदार था , फौज की सशस्त्र बटैलियन व आर्मर्ड गाड़ियों के साथ निहत्थी भीड़ को सबक सिखाने निकला। जाने का रास्ता संकरा होने के कारण गाडियाँ बाग तक नहीं पहुँच सकी तब उन्हें निकास द्वार को ब्लाक (अवरुद्ध) करने के लिए लगा दिया गया।

मैदान में जाते ही सशस्त्र बटैलियन ने पोजीशन ले ली। 'रेजीनाल्ड डायर' ने भीड़ को हटाने के लिए मात्र दो मिनट का समय दिया और उसके बाद बटैलियन को निहत्थी भीड़ पर फायर करने का हुक्म दे दिया। सिपाहियों ने मानवता के नाते भीड़ तितर बितर करने के लिए जब पहले गोलियां हवा में दागी तो डायर ने क्रोध में कहा “NO, Shoot to Kill’ (नहीं, मौत के घाट उतारने के निमित्त गोली दागो”)।

गोलियां तब तक बरसती रहीं जब तक गोलियां खत्म नहीं हो गईं। दुष्ट डायर बीचबीच में सिपाहियों को उस तरफ फायर करने के आदेश देता रहा जहां भीड़ सबसे अधिक घनी थी। इसके बाद घायलों को चीखताछोड़ डायर विजय की मुद्रा में वापस हो गया।

सरकारी तौर पर मृतकों कि संख्या मात्र 359 दिखाई गयी वहीं अमृतसर के अंग्रेज़ सिविल सर्जन ने यह संख्या 1800 के लगभग बताई।

रेजीनाल्ड डायर ने स्वयं अपने बयान में कहा “उन असभ्यों को कानून तोड़ने की समुचित सज़ा दीगयी। मुझे इसका कोई अफसोस नहीं”। दूसरे बयान में उसने कहा “कानून सभ्य एवं और पढे लिखे लोगों के लिए होता है”। उसकी निगाह में भारतीय असभ्य होने की वजह से कानून की सुरक्षा के काबिल नहीं थे।

इस दुर्घटना का भारत में ही नहीं पूरे विश्व में भर्त्सना की गई। कहते हैं कि भारत में अँग्रेजी राज्य की उल्टी गिनती 13 अप्रैल 1919 से ही प्रारम्भ हो गई।

भारत व विश्व के देशों के दबाव से रेजीनाल्ड डायर जो अब 'बचर आफ अमृतसर' (अमृतसर का जन हत्यारा) पुकारा जाने लगा था उसे सेवा से बर्खास्त कर ब्रिटिश पार्लियामेंट में सामूहिक हत्या का मुकदमा चला कर दोषी पाया गया किन्तु भर्त्सना के अलावा कोई सज़ा नहीं दी गई।

वहीं लंदन के एक अखबार द्वारा जारी की गई अपील पर ब्रिटिश जनता व फौजी अधिकारियों ने ‘बचर आफ अमृतसर’ को उसकी सेवा निवृत्ति पर ‘देश के लिए उत्कृष्ट सेवा ’ करने के लिए एक मोटी धनराशि (आज के समय में दस लाख पाउंड के बराबर धनराशि) प्रदान की गई।

डायर कई सालों के पक्षाघात झेलने के बाद 1927 में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

युवा नायक ऊधम सिंह

भारतीय गदर पार्टी के एक 17 वर्षीय युवक ने जालियांवाला कांड से आहत होकर रेजीनाल्ड दायर और उसे प्रोत्साहित करने वाले ओ’ डायर को स्वयं मौत की सज़ा देने का प्रण किया। इस उद्देश्य से वह कई देशों से घूमता हुए 1934 में लंदन पहुँचा। तब तक ‘बचर आफ अमृतसर’ तिल तिल कर मर चुका था। अतः 13 मार्च 1940 के दिन एक व्यक्तव्य देते समय ‘श्री’ ऊधम सिंह ने ओ’ दायर को गोली मार कर प्राणदंड देने की अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की। ऊधम सिंह ने वहाँ से भागने का कोई प्रयास नहीं किया और स्वेछा से आत्म समर्पण कर दिया।

उनके ऊपर मानव वध का मुकदमा चला। और उन्हें प्राण-दंड दिया गया। ‘मैंने भारत के दोषी को मार कर मात्र अपना कर्तव्य पूरा किया और इसके लिए मुझे कोई पछतावा नहीं है” यह कह कर सहर्ष सूली पर झूल गए।

आज भी लंदन में अमर शहीद ऊधम सिंह की समाधि बनी है , जो भर्तियों के लिए एक पवित्र तीर्थ के समान है।

... पर भारत के इस सपूत को भारत के कितने लोग जानते हैं?